अवध की आवाज

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र राजधानी लखनऊ उत्तर प्रदेश से प्रकाशित

www.avadhkaawaz.com

वर्ष–10 अंक – 159 R.N.I.- UPHIN/2012/45127 लखनऊ गुरुवार 9 सितम्बर 2021 पृष्ठ – 8 मूल्य–3 रूपया

संक्षिप्त समाचार

चित्रकला एवं क्राफ्ट कला प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण आज

अवध की आवाज

लखनऊ। लखनऊ विकास प्राधिकरण द्वारा मिशन शक्ति अभियान के तृतीय चरण के तहत आयोजित चित्रकला एवं क्राफ्ट कला प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेताओं को लखनऊ विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष अक्षय त्रिपाठी द्वारा आज अपराह्न 12:00 बजे प्राधिकरण नवीन भवन, विपिन खण्ड, गोमती नगर के 11वें तल पर स्थित सभागार में पुरस्कृत किया जाएगा। इसके अलावा प्रदर्शनी में विभिन्न संस्थाओं की बालिकाओं द्वारा भी कृतियाँ लगाई गई थी सम्मान समारोह में इन बालिकाओं को भी पुरस्कृत किया जायेगा।

भारत के टोक्यो पैरालंपिक विजेताओं को सम्मानित करेंगे योगी

लखनऊ, (वेब वार्ता)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने टोक्यो पैरालिंपिक के सभी पदक विजेताओं को सम्मानित करने का फैसला किया है। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कार्यक्रम आयोजित करने की योजना तैयार करने को कहा है। सरकार के प्रवक्ता के अनुसार, टोक्यो पैरालिंपिक में खिलाड़ियों के बेहतर प्रदर्शन ने देश को गौरवान्वित किया है। यूपी के पदक विजेताओं के साथ–साथ देश के लिए पदक जीतने वाले सभी लोगों को एक सार्वजनिक समारोह में सम्मानित किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा, इस कार्यक्रम में राज्य के 75 जिलों के सभी दिव्यांग खिलाड़ियों को भी आमंत्रित किया जाना चाहिए। यह उनके लिए मनोबल बढ़ाने वाला होगा। इस आयोजन के लिए एक विस्तश्त योजना तैयार की जानी चाहिए।

यूपी में 10 सितम्बर से चुनावी अभियान का आगाज करेंगी प्रियंका

लखनऊ,(वेब वार्ता)। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा दस दिसम्बर से उत्तर प्रदेश में अपने चुनावी अभियान की शुरूआत करेंगी। प्रदेश की प्रभारी श्रीमती वाड्रा दस दिसम्बर को दो दिवसीय दौरे पर लखनऊ आयेंगी। अपने दो दिवसीय प्रवास के दौरान वह पार्टी पदाधिकारियों के साथ बैठक करेंगी और प्रदेश में अगले साल होने वाले राज्य विधानसभा चुनाव के परिपेक्ष्य में पार्टी की तैयारियों को लेकर चर्चा करेंगी। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू ने बुधवार को पार्टी दफ्तर में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी देते हुये दावा किया कि प्रदेश को नफरत और बदहाली के दलदल से निकालने के लिये कांग्रेस पूरी तरह तैयार है। पार्टी के प्रशिक्षण से पराक्रम अभियान के तहत सभी 403 विधानसभाओं में 24 हजार कार्यकर्ताओं की विजय सेना भाजपा सरकार की कारगुजारियों का जनता के सामने पर्दाफाश करने को तैयार है कांग्रेस महासचिव अपने संक्षिप्त दौरे में सभी जिलों के जिला ब्लाक प्रमुख,पंचायत अध्यक्ष,प्रशिक्षित कार्यकर्ता और अन्य पदाधिकारियों के साथ बैठक कर चुनावी रणनीति पर चर्चा करेंगी।

जाट नेता के नाम पर विश्वविद्यालय की नींव रखेंगे प्रधानमंत्री मोदी

लखनऊ (वेब वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 14 सितंबर को अलीगढ़ में जाट नेता राजा महेंद्र प्रताप सिंह के नाम पर राज्य में विश्वविद्यालय का शिलान्यास करेंगे। इस कदम का उद्देश्य जाट

आबादी पर जीत हासिल करना है, क्योंकि पश्चिम यूपी क्षेत्र के 12 जिलों में मतदान आबादी का लगभग 17 प्रतिशत है। प्रधानमंत्री के दौरे की तैयारियों का जायजा लेने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बुधवार को अलीगढ़ जाएंगे। पीडब्ल्यूडी के प्रमुख सचिव, नितिन रमेश गोकर्ण के अनुसार, विश्वविद्यालय के निर्माण की तारीख से कम से कम 24 महीने लगेंगे, जब इसकी नींव रखी जाएगी। इसलिए, विश्वविद्यालय के सितंबर 2023 तक तैयार होने की उम्मीद है। विश्वविद्यालय की स्थापना अलीगढ़ जिले की कोल तहसील के लोढ़ा और मुसाईपुर गांव में 115 एकड़ से अधिक क्षेत्र में होगी। राज्य सरकार पहले ही इस उद्देश्य के लिए 101 करोड़ रुपये से अधिक का प्रारंभिक बजट आवंटित कर चुकी है। वर्तमान में, अलीगढ़ संभाग में केवल एक राज्य विश्वविद्यालय है, डॉ बीआर अंबेडकर विश्वविद्यालय, जो आगरा में है। योगी आदित्यनाथ सरकार ने 2019 में अलीगढ़ में राजा महेंद्र प्रताप सिंह के नाम पर एक राज्य विश्वविद्यालय स्थापित करने का फैसला किया था, जब कुछ दक्षिणपंथी संगठनों ने सिंह के नाम पर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (एएमयू) का नाम बदलने की मांग की थी। प्रतिष्ठित केंद्रीय विश्वविद्यालय के लिए भूमि दान की है जिसे शुरू में 1877 में सर सैयद अहमद खान द्वारा मुहम्मदन एंग्लो ओरिएंटल (एमएओ) कॉलेज के रूप में स्थापित किया गया था। कॉलेज को औपचारिक रूप से 1920 में एक विश्वविद्यालय में बदल दिया गया। पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों के अनुसार, परियोजना के लिए नोडल विभाग, राज्य सरकार ने एक विशाल शैक्षणिक ब्लॉक, एक प्रशासनिक भवन, एक सुविधा केंद्र, स्वास्थ्य केंद्र, लड़कों और लड़कियों के लिए छात्रावास और शैक्षणिक कर्मचारियों के लिए आवासीय भवनों के निर्माण की योजना बनाई है। 1 दिसंबर, 1886 को हाथरस जिले के मुरसान के एक सामाजिक–आर्थिक रूप से प्रभावशाली जाट परिवार में पैदा हुए राजा महेंद्र प्रताप सिंह एक स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक थे। उन्होंने 1905 तक मुहम्मडन एंग्लो–ओरिएंटल कॉलेज में अध्ययन किया। बाद में उन्होंने 1909 में वृंदावन में एक स्वदेशी तकनीकी संस्थान प्रेम महाविद्यालय की स्थापना की, एक पहल जिसने उन्हें 1932 में नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अलीगढ़ में लम्बे समय से सक्रिय शराब माफिया तंत्र को किया गया नेस्तनाबूद

शराब माफियाओं से 70 करोड़ रूपये से अधिक की सम्पत्ति हुई जब्त

अवध की आवाज

लखनऊ। प्रदेश के अलीगढ़ जनपद में लम्बे समय से सक्रिय शराब माफिया तंत्र के विरूद्ध कठोर कार्यवाही कर उनकी कमर तोड़ते हुए उन्हे नेस्तनाबूद किया गया है। साथ ही शराब माफियाओं से 70 करोड़, 71 लाख रूपये से अधिक की सम्पत्ति भी जब्त की जा चुकी है तथा 01 करोड़, 59 लाख रूपये से अधिक की सम्पत्ति की जब्तीकरण की कार्यवाही प्रचलित है। अपर मुख्य सचिव, गृह श्री अवनीश कुमार अवस्थी ने उक्त जानकारी देते हुये बताया कि जनपद अलीगढ़ में इस वर्ष मई माह में हुई जहरीली शराब की घटना में संलिप्त शराब माफियाओं के विरूद्ध गैंगेस्टर एक्ट सहित अन्य कड़ी विधिक कार्यवाही की गयी है। इस प्रकरण में अब तक कुल 87 अभियुक्त गिरफ्तार कर जेल भेजे गये तथा सभी 33 अभियोगों में अभियुक्तों के विरूद्ध आरोप–पत्र न्यायालय मे दाखिल किये गये हैं। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, अलीगढ से मिली जानकारी के अनुसार जनपद में अवैध व अपमिश्रित शराब प्रकरण में सम्मिलित रहे 09 अभियोगों में 73 अभियुक्तों के विरूद्ध गैंगेस्टर की कार्यवाही की गयी है। साथ ही 80 शराब तस्करों की हिस्ट्रीशीट भी खोली गयी है। उन्होंने बताया कि अवैध शराब के कारोबार में लिप्त 74 अभियुक्तों के विरूद्ध 09 गैंग पंजीकरण कराये गये। इस घटना में शामिल अभियुक्तों एवं उनके सम्बन्धियों द्वारा संचालित की जा रही कुल 82 दुकानों के निलम्बितध निरस्तीकरण की कार्यवाही हुई है। उन्होने यह भी बताया कि 28 अभियोगों का मा0 न्यायालयों में विचारण आरम्भ हो चुका है।

गोमतीनगर विस्तार में दो अवैध निर्माण सील किये गये

अवध की आवाज

लखनऊ। लखनऊ विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष अक्षय त्रिपाठी द्वारा लखनऊ शहर में अवैध निर्माणों के खिलाफ प्रभावी कार्यवाही जारी

रखने के निर्देशों का असर दिखने लगा है। उक्त के क्रम में आज निम्नानुसार कार्यवाही की गई। प्रवर्तन, जोन–1 के विहित प्राधिकारी आनन्द कुमार सिंह ने बताया कि भानू प्रसाद कोरी व अन्य द्वारा मकान संख्या 1, जैम इन्क्लेव, लोयला पब्लिक स्कूल के बगल में, जयपाल खेड़ा, भरवारा, थाना गोमतीनगर विस्तार तथा श्रीमती कनक सिंह व अन्य द्वारा बी–6ध्190, सेक्टर–6, गोमतीनगर विस्तार, लखनऊ पर अनाधिकृत निर्माण किये जाने पर उसे सील किये जाने के आदेश दिये गये थे। उपरोक्त आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए आज अधिशासी अभियन्ता अवनीन्द्र

कुमार सिंह के नेतृत्व में प्राधिकरण व क्षेत्रीय पुलिस बल की सहायता से सील किया गया।

पुलिस आयुक्त ने चार अपराधियों को किया जिला बदर

कानपुर (वेब वार्ता)। जनपद में अपराध पर लगाम लगाने के लिए पुलिस कमिश्नरेट कानपुर नगर द्वारा मंगलवार को चार शातिर अपराधियों को जिला बदर करने की कार्यवाही की गई। जिन अपराधियों पर जिला बदर की कार्यवाही की गई उन पर आईपीसी की कई संगीन धाराओं में मुकदमें दर्ज हैं। जिला बदर की पहली कार्यवाही शान मोहम्मद पुत्र सिराज निवासी मुंशीपुरवा थाना बाबूपुरवा पर की गई। इस पर धारा 147, 148, 149, 332, 353, 336, 307, 188, 427, 34, 109, 302, 120बी भादवि व सेवन सीएलए एक्ट व 3ध्4 पीपीडी एक्ट व 27 आयुध अधिनियम थाना बाबूपुरवा में दर्ज हैं। दूसरी कार्यवाही मो0 जकी खान उर्फ हाजी गुड्डू पुत्र हाजी समीम निवासी छबीलेपुरवा थाना चकेरी पर की गई। इस पर 147, 353, 504, 506, 352 भादवि व 07 सीएलए एक्ट समेत कई संगीन धाराओं में मुकदमें दर्ज हैं।

पंचायत सहायकों की नियुक्ति में गड़बड़ी करने वाले ग्राम प्रधान व सचिवों पर दर्ज होगी प्राथमिकी : डीएम

गोंडा (वेब वार्ता)। पंचायत सहायक पद की नियुक्ति के मामले में ग्राम प्रधान व पंचायत सचिव द्वारा गड़बड़ी किए जाने की विभिन्न स्तरों से आ रही शिकायतों का संज्ञान लेते हुए डीएम ने आदेश जारी कर चेतावनी दी है कि नियमों का उल्लंघन या पक्षपात कर नियुक्ति करने वाले ग्राम प्रधान के साथ–साथ वहां के पंचायत सचिव के विरुद्ध नामजद एफआईआर दर्ज कराई जाएगी। जिलाधिकारी मार्कंडेय शाही ने बताया नियुक्ति प्रक्रिया में पूरी पारदर्शिता बरतने के साथ नियमों व मानकों का पूरा अनुपालन सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए गए हैं। इसलिए इसमें यदि किसी भी ग्राम प्रधान द्वारा नियमों को दरकिनार कर नियुक्ति की गई तो वह प्रधान व पंचायत सचिव कठोर कार्यवाही के लिए तैयार रहे। उन्होंने कहा कि नियुक्ति में यदि मानक व नियमों का विचलन हुआ तो ग्राम प्रधान व पंचायत सचिव की व्यक्तिगत जिम्मेदारी तय की जाएगी।

किसान मोर्चा के प्रदेश कार्यकारणी के सदस्य मनोनयन पर हार्दिक शुभकामनाये

सम्पादकीय

उज्ज्वला योजना:कितनी हकीकत कितना फसाना

मार्च 2015 में हमारे प्रधानमंत्री ने देशवासियों से घरेलु गैस उपभोक्ताओं से गैस सब्सिडी छोड़ने का आवाह्न किया था। सरकार द्वारा उस समय यही बताया गया था कि जनता द्वारा स्वेच्छा से सब्सिडी त्यागने के बाद जो धनराशि जुटाई जाएगी उससे उन गरीबों को मुफ्त गैस कनेक्शन दिया जाएगा जो अभी तक लकड़ी या गोबर के उपले आदि जलाकर चूल्हे पर खाना बनाने के लिये मजबूर हैं। इसी महत्वाकांक्षी योजना का नाम था प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना जिसकी शुरुआत 2016 में जोरदार आयोजनों व जबरदस्त प्रचार प्रसार के साथ एक उत्सव के रूप में हुई थी। जितने पैसे गरीबों को गैस कनेक्शन व गैस चूल्हा आदि मुफ्त में उपलब्ध करवाने में सरकार ने खर्च किये होंगे संभवतः कम ो बेश उतने ही पैसे इन योजना का ढिंढोरा पीटने में खर्च कर दिये गये। अखबार,टी वी,फ्लेक्स विज्ञापनों के अलावा देश का शायद ही कोई पेट्रोल पंप ऐसा बचा हो जहाँ प्रधानमंत्री के बड़े चित्र साथ उज्ज्वला योजना का विशाल फ्लेक्स बोर्ड न लगाया गया हो। इस योजना का एक दूरगामी मकसद यह भी था कि भारतवर्ष एक ऐसे देश के रूप में जाना जा सके जो धुंआ रहित देश हो। इस योजना के अंतर्गत देश के 5 करोड़ लोगों तक गैस कनेक्शन निःशुल्क पहुंचाना था। विशेषकर गरीबी रेखा के नीचे जीवन–यापन करने वाली महिलाओं के लिए चलाई जाने वाली इस योजना के पूरा होने की समय सीमा 2019 तय की गई थी। अभी यह योजना अपने लक्ष्य यानी पांच करोड़ गरीबी रेखा के नीचे जीवन–यापन करने वाले परिवारों तक पहुंच भी नहीं सकी थी कि इसी बीच वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने 1 फरवरी 2021 को आम बजट पेश करते हुए यह घोषणा कर डाली कि प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के तहत इसी वर्ष एक करोड़ रसोई गैस के कनेक्शन मुफ्त में दिए जाएंगे। और इसी 'प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना' के दूसरे चरण यानी प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना 2:0 की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 10 अगस्त को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा उत्तर प्रदेश के महोबा जिले में लाभार्थियों को गैस कनेक्शन देते हुए की गयी। इस अवसर पर प्रधाननमंत्री ने उज्ज्वला योजना के कुछ लाभार्थियों से भी बात की। यहां गौरतलब यह भी है कि उज्ज्वला योजना 1 :0 में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवार की 5 करोड़ महिलाओं को गैस कनेक्शन बांटने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। जबकि 2018 में इसी योजना में सात और श्रेणी की महिलाओं को भी लाभार्थियों की सूची में शामिल किया गया इनमें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अंत्योदय अन्न योजना, अति पिछड़ा वर्ग, चाय बागान वर्कर, वनवासी व द्वीपों में रहने वाले परिवारों की महिलायें शामिल हैं। इसी प्रकार उज्ज्वला 2:0 का लाभ लेने के लिए राशन कार्ड और पता प्रमाणपत्र जमा करने की जरूरत को समाप्त किया गया। नई योजना में जरूरतमंद परिवार स्वयं द्वारा सत्यापित आवेदन देकर भी इस योजना का लाभ ले सकेगा। सरकार द्वारा बताया गया कि यह कनेक्शन कम आमदनी वाले उन परिवारों को दिए जाएंगे, जो उज्ज्वला योजना के पहले चरण में शामिल नहीं हो सके थे। उज्ज्वला योजना के 'सरकारी गुणगान अभियान' के तहत जब हम यह सुनते हैं कि इस योजना से महिलाओं को धुवें से निजात मिलेगी, ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को खाना बनाने के लिए रोजाना प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने के चलते उन्हें जिन समस्याओं से जूझना पड़ता था उससे मुक्ति मिलेगी आदि,तो निश्चित तौर पर ऐसा ही प्रतीत होता है गोया देश के गरीबों की इससे ज्यादा हितचिंतक सरकार दूसरी नहीं हो सकती। परन्तु इस योजना की धरातलीय स्थिति भी क्या वही है जो हमें सरकार व उसकी 'प्रवक्ता' बनी बैठी सत्ता परस्त मीडिया द्वारा दिखाई जा रही है ? जब प्रधानमंत्री इस योजना के लाभार्थियों से बात करते हैं तो चंद लोगों को बाकायदा प्रधानमंत्री से बातचीत का फुल रिहल्सल कराकर कैमरे के समक्ष बिठाया जाता है जो इस योजना की तारीफ करते हैं और सरकार का धन्यवाद करते हैं। परन्तु इस योजना की हकीकत तो कुछ और ही है। और इस हकीकत को जानने के लिये देश के किसी भी गांव या शहर के बी पी एल परिवार के व्यक्ति से मिलकर इस योजना की सफलता या असफलता के निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है।

जिस समय 2016 में उज्ज्वला 1.0 शुरू की गयी थी उस समय यानी 2016–17 के दौरान घरेलू गैस की कीमत 550 रूपये प्रति सिलिंडर से भी नीचे थी। उसी समय ऐसे उपभोक्ता सामने आने लगे थे जिन्होंने आर्थिक तंगी के चलते दुबारा गैस नहीं भरवाई। और वे पुनः धुआँ युक्त पारंपरिक प्रकृतिक ईंधन इस्तेमाल करने लगे। सोचने का विषय है कि आज भले ही उज्ज्वला 2. 0 की घोषणा कर उसी पुरानी योजना के नाम पर पुनः वाहवाही लूटने की कोशिश की जा रही हो परन्तु आज उसी गैस का मूल्य लगभग 1000 /–रूपये प्रति सिलिंडर पहुँचने के करीब है। हर महीने और कभी तो हर हफ्ते कीमतों में इजाफा जारी है। सवाल यह है कि जो गरीब 550 रूपये कीमत का सिलिंडर भरने में असमर्थ था वह भला 1000 /–रूपये कीमत का सिलिंडर कैसे भरवा सकेगा ? और वह भी कोरोना का भयानक संकट झेल चुके उस देश में जहाँ करोड़ों लोग बेरोजगार हो चुके हों ?और इस बेरोजगारी का भी सबसे अधिक प्रभाव भी इन्हीं गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों पर ही पड़ा हो ? द सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनमी' (सीएमआईई) द्वारा जुटाए गए आँकड़े बताते हैं कि गत वर्ष लॉकडाउन के बाद बेरोजगारी दर बढ़कर 8.35 फीसदी थी। और गत अगस्त माह में बढ़कर 8.32 फीसदी हो गई। मई माह में बेरोजगारी दर 11.9 फीसदी थी और इसी महीने 1.5 करोड़ लोगों की नौकरियां समाप्त हो गयी थीं। यदि आज हम किसी भी राज्य की गरीब गृहणियों से मुलाकात करें तो यही पायेंगे कि गैस की कीमत बेतहाशा बढ़ने के चलते अधिकांश गरीबों ने गैस भरवाना बंद कर दिया है। सरकारी उज्ज्वला योजना के अंतर्गत आवंटित सिलिंडर चूल्हे इनके घरों में धूल खा रहे हैं। किसी ने कई महीनों से गैस नहीं भरवाई तो किसी ने साल दो साल से गैस नहीं ली। ऐसे में इस योजना की सार्थकता पर सवाल उठना लाजिमी है। जब बेरोजगारी व गैस की कीमतें दोनों ही आसमान छू रही हों ऐसे में सहज ही इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है कि उज्ज्वला योजना की कितनी हकीकत है और इसका कितना फसाना बयान किया जा रहा है।

शिक्षा नीति से जुड़ी चुनौतियां

–डा. वरिंदर भाटिया–

हिमाचल, पंजाब इत्यादि देश के कुछ अग्रणी राज्य हैं जहां राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लेकर संजीदगी है। इसका उद्देश्य 21वीं शताब्दी की आवश्यकताओं के अनुकूल स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और वैश्विक महाशक्ति में बदलकर प्रत्येक छात्र में निहित अद्वितीय क्षमताओं को सामने लाना है। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत शैक्षिक ढांचे को बेहतर बनाने का सरकार का प्रयास अपने आप में एक सराहनीय कार्य है, लेकिन इसके समक्ष कई चुनौतियां हैं, जिन्हें निम्नलिखित बिंदुओं के तहत वर्णित किया जा सकता है। भारत में लगभग एक–तिहाई बच्चे प्राथमिक शिक्षा पूरी करने से पहले स्कूल छोड़ देते हैं। यह उल्लेखनीय है कि अधिकांश बच्चे, जो स्कूल जाने में असमर्थ हैं, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति, धार्मिक अल्पसंख्यकों और दिव्यांग समूहों से संबंधित हैं। एक महत्त्वपूर्ण चुनौती बुनियादी ढांचे की कमी से संबंधित है।

यह आम तौर पर देखा गया है कि स्कूलों और विश्वविद्यालयों में बिजली, पानी, शौचालय, चारदीवारी, पुस्तकालय, कंप्यूटर आदि की कमी है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा प्रणाली प्रभावित होती है। नई शिक्षा प्रणाली के सामने एक चुनौती शिक्षकों की कमी को दूर करना भी है। नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (सीएजी) की 2017 की रिपोर्ट के अनुसार एकल शिक्षक के भरोसे बड़ी संख्या में स्कूल चल रहे हैं, जो शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। एक अन्य चुनौती उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना है। यह उल्लेखनीय है कि बहुत कम भारतीय शिक्षण संस्थानों को शीर्ष 200 विश्व रैंकिंग में जगह मिलती है। यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति सरकार द्वारा शिक्षा प्रणाली में एक बड़े बदलाव का संकेत देती है, लेकिन इसमें कई चुनौतियां भी हैं।

उल्लेखनीय है कि इन चुनौतियों से निपटने का प्रयास पूर्व में भी किया जा चुका है, लेकिन उपलब्धियां सराहनीय नहीं रही हैं। इस संदर्भ में कुछ सुझावों को यहां लागू करने की आवश्यकता है। इस नीति के तहत शिक्षा अभियान को सफल बनाने के लिए सरकार, नागरिकों, सामाजिक संस्थाओं, विशेषज्ञों, अभिभावकों, समुदाय के सदस्यों को अपने स्तर पर काम करना चाहिए। शैक्षिक संस्थानों, कार्यान्वयन एजेंसियों, छात्रों और औद्योगिक क्षेत्रों के नेताओं के बीच एक सहजीवी संबंध स्थापित किया जाना चाहिए। इसलिए नवाचारों का एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाया जा सकता है जिसमें रोजगार के बड़े अवसर पैदा हो सकते हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि उद्योग शिक्षण संस्थानों से जुड़े हों। इसके अलावा कॉर्पोरेट प्रतिष्ठानों को विशेष महत्त्व के क्षेत्रों की पहचान करनी चाहिए और देश के डॉक्टरेट और पोस्ट–डॉक्टोरल प्रोग्रामों के अनुसंधान के लिए वित्त प्रदान करना चाहिए। क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों, प्रतिष्ठित उद्योग संगठनों, मीडिया हाउस और पेशेवर निकायों को भारतीय विश्वविद्यालयों और संस्थानों को रेटिंग देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। एक मजबूत रेटिंग प्रणाली विश्वविद्यालयों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ाएगी और उनके प्रदर्शन में सुधार करेगी। भारतीय विश्वविद्यालय अभी भी दुनिया के शीर्ष 200 रैंक वाले विश्वविद्यालयों में शामिल नहीं हैं।

इस संबंध में विश्वविद्यालयों और शिक्षाविदों को संबंधित मानकों में आत्मनिरीक्षण और सुधार करना चाहिए। स्कूली शिक्षा में सुधार के अलावा शिक्षण और प्रशिक्षण विधियों में भी सुधार किया जाना चाहिए। यह भी देखना होगा कि सरकारें राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार कानूनों को बदलने के बाद आवश्यक अतिरिक्त बजट प्रदान करने और उसे खर्च करने में सक्षम हैं या नहीं। नई शिक्षा नीति में विदेशी विश्वविद्यालयों के प्रवेश का मार्ग प्रशस्त किया गया है। विभिन्न शिक्षाविदों का मानना है कि विदेशी विश्वविद्यालयों के प्रवेश से भारतीय शिक्षण व्यवस्था महंगी होने की संभावना है। परिणामस्वरूप निम्न वर्ग के छात्रों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो जाएगा। नई नीति के मुताबिक सरकार शिक्षा पर जीडीपी का 6 फीसदी खर्च करेगी। हालांकि 1968 और 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी यही बात कही गई थी, लेकिन वर्तमान समय में तस्वीर बेहद अलग है। दरअसल 2017–18 में भारत सरकार ने जीडीपी का महज 2.7 फीसदी ही शिक्षा पर खर्च किया। खुद भारत सरकार के अनुसार 2017–18 में हमने शोध कार्यों पर जीडीपी का महज 0.7 फीसदी खर्च किया। लिहाजा खर्च के मामले में सरकार इतनी बड़ी उछाल कैसे लाएगी, इस पर स्थिति साफ नहीं हो सकी है। उधर ग्रॉस एनरोलमेंट अनुपात पहुंचाने का लक्ष्य 26.3 फीसदी से बढ़ाकर 50 फीसदी रखा गया है। आर्थिक सर्वेक्षण 2017–18 के मुताबिक भारत में प्रति एक लाख आबादी पर शोध करने वालों की संख्या महज 15 है, जबकि चीन इतनी ही संख्या में 111 बना रहा है।

सरकार ने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए 3.5 करोड़ नई सीटें जोडने की बात कही है, लेकिन फिर वही सवाल है कि इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए सरकार के पास क्या खाका है और सरकार इस लक्ष्य को कैसे हासिल करेगी? उच्च शिक्षा में यूजीसी–एआईसीटीई की जगह एक ही नियामक को लेकर भी विवाद है। जानकारों का मानना है कि इस नियामक की कमान केंद्र सरकार के हाथ में होगी, इसलिए इससे शिक्षा का केंद्रीयकरण होगा जिससे संस्थानों की स्वायत्तता की राह में रुकावट पैदा होगी। बच्चों को मातृभाषा या स्थानीय भाषा में पढ़ाने को लेकर भी कई तरह के सवाल और अनिश्चितताएं हैं। उदाहरण के लिए दिल्ली जैसे केंद्र शासित प्रदेश में देश के अलग–अलग राज्यों से आए लोग रहते हैं। ऐसे में एक ही स्कूल में अलग–अलग मातृभाषा को जानने वाले बच्चे होंगे, लिहाजा सवाल है कि उन बच्चों का माध्यम क्या होगा? एक बड़ा सवाल अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों को लेकर भी है, क्या ऐसे स्कूल स्थानीय भाषा वाले कांसेप्ट को अपनाने को तैयार होंगे। प्राइमरी में ही एक राज्य से दूसरे राज्य शिफ्ट करने वाले बच्चे का माध्यम न बदले, इसके लिए सरकार क्या उपाय करेगी? यह कुछ ऐसे बिंदु हैं जिन पर अभी काफी उहापोह का माहौल है। नई शिक्षा नीति द्वारा सरकार के लिए एक चुनौती यह भी होगी कि वर्तमान समय में व्यापारीकरण, व्यवसायीकरण तथा निजीकरण ने शिक्षा क्षेत्र को अपनी जकड़ में ले लिया है।

मंडी में शिक्षा क्रय–विक्रय की वस्तु बनती जा रही है, जिसे बाजार में निश्चित शुल्क से अधिक धन देकर खरीदा जा सकता है। परिणामतः शिक्षा में एक भिन्न प्रकार की जाति प्रथा जन्म ले रही है जिसमें छात्र धन के आधार पर इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट और डॉक्टर आदि उपाधियों के लिए प्रवेश पाकर उच्च भावना से ग्रस्त और धनाभाव के कारण प्रवेश से वंचित हीनभावना से ग्रस्त रहते हैं, जिससे असमानता की खाई बढ़ रही है। सामाजिक असंतुलन और विषमता इसका ही परिणाम है। सभी बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए मानना है कि इस नई शिक्षा नीति के सकारात्मक पहलू नकारात्मक पहलुओं की अपेक्षा अधिक हैं। मगर आगे की राह संघर्ष और चुनौतियों भरी है। सभी घोषणाओं को जमीन पर उतरने के लिए बुनियादी अवसंरचना की जरूरत होगी। इससे भी ज्यादा राजनीतिक इच्छाशक्ति को प्रबल करना होगा। नीति का क्रियान्वयन कितना मुश्किल है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अभी शिक्षा के लिए आवंटित फंड का पूरा इस्तेमाल भी नहीं हो पाता। शिक्षा में सुधार के लिए सबसे जरूरी यह है कि शिक्षण संस्थाओं की स्वायत्तता को हर कीमत पर कायम किया जाए। बहरहाल उम्मीद की जा रही है कि केवल कागजी खानापूर्ति के बजाय सही अर्थों में नीतियों को लागू करने की कोशिश की जाएगी।

सजग रहें, भगाएं त्यौहारों में कोविड को

–आर.के. सिन्हा–

कोविड और त्यौहारों के मौसम का बहुत ही घनिष्ठ और घातक संबंध है। त्यौहारों में लोग घरों से मंदिरों, धार्मिक स्थानों, बाजारों तथा सगे सम्बन्धियों के लिए निकलने लगते हैं। नतीजा यह होता है कि भीड़भाड़ बढ़ने के कारण कोविड का जिन्न सामने आकर खड़ा हो जाता है। पिछले साल दशहरा और दिवाली के बाद कोविड के रोगियों की बढ़ी हुई संख्या को सारे देश ने देखा था। अब जन्माष्टमी से त्यौहारों का सीजन चालू हो चुका है। सारे देश ने जन्माष्टमी का पर्व वैसे तो बहुत संयम से मनाया। कहीं भी बड़े सार्वजनिक आयोजन नहीं हुए। इसका लाभ भी प्रत्यक्ष दिख ही रहा है। लगभग सारे देश में कोविड के केस घट रहे हैं। वैसे केरल इसका बड़ा अपवाद हो सकता है। अब कोविड महामारी की तीसरी लहर की आशंका के बावजूद कर्नाटक सरकार ने राज्य में गणेश चतुर्थी समारोह की इजाजत दे दी है। समारोह तीन दिनों तक ही सीमित रहेगा। भगवान गणेश की मूर्तियों को स्थापित करने और संबंधित उत्सव आयोजित करने के लिए स्थानीय जिला प्रशासन या बेंगलुरु शहर के क्षेत्रों में बृहत बेंगलुरु महानगर पालिका से पूर्व अनुमति जरूरी है। कर्नाटक के बाद महाराष्ट्र में भी गणेश चतुर्थी मनाने की अनुमति मिलना अब तय माना जा रहा है। आखिरकार गणेश चर्तुथी का असली आयोजन तो महाराष्ट्र में ही होता है। जिसे 1907 ई. में पुणे से लोकनायक बालगंगाधर तिलक ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जनता को संगठित करने के उद्देश्य से किया था। अब अगर इन पर्वों को मनाने की इजाजत राज्य सरकारों द्वारा दी जा रही थी तो यह भी देख लिया जाना जरूरी है कि इनमें कोविड गाइडलाइंस को सख्ती से लागू भी किया जाए। इनके आयोजनों के दौरान किसी भी तरह की अराजकता न हो। अगर यह हुआ तो हमें फिर से कोविड के बढ़े हुए केस देखने को मिल सकते हैं। वह स्थिति तो बहुत भयानक होगी। अब रामलीला का भी वक्त दूर नहीं है। दिल्ली, उत्तर प्रदेश और देश के बाकी हिंदी भाषी भागों में रामलीला का मंचन होगा या नहीं, इस पर जल्दी ही स्थिति साफ हो जानी चाहिये । हालांकि कुछ रामलीला कमेटियां अभी से ही रामलीला मंचन को लेकर दावे भी कर रही हैं। इन सब आयोजनों में जन भागीदारी भी काफी रहती है। लेकिन भीड़ की स्थिति में कोविड गाइडलाइंस का तार–तार होना भी तो तय है। प्रशासन के लाख दावों और कोशिशों के बावजूद अभी भी कुछ लोग मास्क पहनना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। फिर भीड़ में सोशल डिस्टेनसिंग की बातें बेमानी होगी। यह सब गंभीरता से चिंतन योग्य बातें हैं। दशहरा के दौरान ही दुर्गा पूजा भी होती है। उसमें भी पंडाल में खूब लोग जुटते हैं। दशमी के सोलहवें दिन दीवाली और उसके बाद मात्र दो दिन बाद भाईदूज और चित्रगुप्त पूजा और उसके तीन दिनों बाद छठ का महापर्व।

हालांकि देश में कोविड पर काबू पाने के लिए टीकाकरण का काम भी तेजी से चल रहा है, एक–एक दिन में एक करोड़ से ज्यादा वैक्सीन भी लगने जा रहे हैं पर फिलहाल जितना हो सके हमें अपने को कोविड गाइडलाइंस के मुताबिक ही सख्ती से चलना होगा। अब भी बहुत से ऐसे लोग मिल जाते हैं जो कहते हैं कि वे कोविड से लड़ने के लिए जरूरी टीका नहीं लगवाएंगे। वे इस बाबत कई बेसिर पैर के तर्क भी देते हैं। पर जो भी कहिए फिलहाल हमारे पास सिर्फ यह टीका ही है कोविड से बचाव के लिए एक कारगार हथियार।

अच्छी बात यह है कि कुछ राज्यों में टीकाकरण का काम शानदार तरीके से हुआ है। इस लिहाज से हिमाचल प्रदेश का नाम लेना होगा। वहां कोविड टीकाकरण की पहली खुराक सभी को सफलतापूर्वक लग गई है। इस तरह हिमाचल प्रदेश देश का पहला राज्य बन गया है जहां सभी को कोरोना वैक्सीन की पहली डोज दी जा चुकी है। प्रधानमत्री नरेन्द्र मोदी ने सही कहा, '100 वर्ष की सबसे बड़ी महामारी के विरुद्ध लड़ाई में हिमाचल प्रदेश चौंपियन बनकर सामने आया है।' हिमाचल के बाद सिक्किम और दादरा नगर हवेली ने शत–प्रतिशत पहली डोज का पड़ाव पार कर लिया है और अनेक राज्य इसके बहुत निकट पहुंच गए हैं।

देखिए, अभी पूरे देश को सजग रहना ही होगा। इसे जरूरत समझें या मजबूरी। अभी लापरवाही के लिए कोई जगह नहीं है। अगर हम सतर्क और सजग रहे तभी हम कोविड को हरा सकेंगे। इसके लिए यह जरूरी है कि हम त्यौहारों के दिनों में भी घरों से अनावश्यक रूप से बाहर न निकलें। कोविड की वैक्सीन लगवाने में कतई विलंब न करें। भारत आज एक दिन में सवा करोड़ टीके लगाकर रिकॉर्ड बना रहा है। जितने टीके भारत आज एक दिन में लगा रहा है, वो कई देशों की पूरी आबादी से भी ज्यादा है। भारत के टीकाकरण अभियान की सफलता, प्रत्येक भारतवासी के परिश्रम और पराक्रम की पराकाष्ठा का परिणाम है। कोरोना की काट वैक्सीन को लेकर अब घबराने और गलतफहमी के जाल में फंसने का वक्त निकल चुका है। अब इसे फौरन लगवा ही लेना चाहिए। जो लोग वैक्सीन लगवाने से बच रहे हैं उन्हें अपनी सोच बदल लेनी चाहिए। हमने पहले देखा था जब उड़न सिख मिल्खा सिंह कह रहे थे कि उन्होंने कोरोना की वैक्सीन लगवाने के संबंध में सोचा ही नहीं। अफसोस कि कोरोना के कारण ही उनकी जान चली गई। अगर उन्होंने कोरोना वैक्सीन को वक्त रहते लगवा लिया होता तो वे स्वस्थ हो जाते, क्योंकि वैक्सीन कोरोना वायरस के असर को काफी हद तक खत्म कर देती है। मैं एक वर्ष तक कोरोना से बचा रहा, लेकिन हर सतर्कता के बावजूद एक सार्वजनिक कार्यक्रम में कोरोना की चपेट में आ गया, परन्तु मुझे दोनों वैक्सीन समय से लग चुकी थी, पंद्रह दिन घर पर ही आराम करके बिलकुल ठीक हो गया। देखिए कि अब जिंदगी काफी हद तक पटरी पर वापस आ रही है। स्कूल–कॉलेज भी खुलने लगे हैं। बाजार तो खुल ही रहे हैं। पर अभी हम कोविड से पहले के दौर में अभी लौट नहीं सकते क्योंकि इस महामारी का असर तो बरकरार है। अभी इस पर विजय पाने में कुछ और वक्त लग सकता है। बेशक, कोविड ने हम सबकी जिंदगी को काफी हद तक बदल डाला है। पहले किसने कहाँ सुना था 'वर्क फ्रॉम होम' के बारे में। पर अब यह व्यवस्था तो अनेकों बड़ी कंपनियों को भी सूट करने लगी है। इससे उन्हें दफ्तर चलाने के भारी–भरकम खर्चों से निजात मिल जाती है। यह तो मानना होगा कि वर्क फ्रॉम होम के कारण अब भी देशभर में लाखों पेशेवर अपने घरों से ही काम कर रहे हैं। यह भी देखा जाए तो कोविड से बचाव का तो यह एक बड़ा और कारगर रास्ता तो है। पर आपको घर से तो निकलना ही होता है। इसलिए बेहतर यही होगा कि बहुत सोच–समझकर ही घर से बाहर जाएं। त्यौहारों में तो खासतौर पर अनावश्यक रूप से ना निकलें। इसी में आपकी और सबकी सुरक्षा है। जीवन रहेगा तो घूमने और तफरीह के बहुत से मौके मिलते रहेंगे।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं।)

मन और तन को उजालने का पर्व है पर्युषण

–ललित गर्ग–

शांति और सुख की कामना के साथ जीवन सभी जीते हैं, लेकिन उसे खुली आंखों से देखते नहीं, जागते मन से जीते नहीं। इसीलिये जैन परम्परा में आध्यात्मिक पर्व पयुर्षण को मनाया जाता है जो इस वर्ष 4 सितम्बर से 11 सितम्बर, 2021 तक आयोजित होगा। पर्युषण महापर्व के इन आठ दिनों में सभी जैन श्रद्धालुओं द्वारा तन और मन को साधनामय बना लेने के साथ मन को इतना मांज लेने का प्रयत्न किया जायेगा कि अतीत की त्रुटियां को दूर करते हुए भविष्य में कोई भी गलत कदम न उठे, इसकी तैयारी होगी। इन आठ दिनों में एक ऐसा मौसम ही नहीं, माहौल निर्मित किया जायेगा, जो हमारे जीवन की शुद्धि कर देगा। इस दृष्टि से यह पर्व आध्यात्मिकता के साथ–साथ जीवन उत्थान का पर्व है।

पर्युषण पर्व अंर्तआत्मा की आराधना का पर्व है– आत्मशोधन का पर्व है, निद्रा त्यागने का पर्व है। सचमुच में पर्युषण पर्व एक ऐसा सवेरा है जो निद्रा से उठाकर जागश्त अवस्था में ले जाता है। अज्ञानरूपी अंधकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर ले जाता है। तप, जप, स्वाध्याय की साधना करते हुए अपने आपको सुवासित करते हुए अंर्तआत्मा में लीन हो जाए जिससे हमारा जीवन सार्थक व सफल हो पाएगा।

पर्युषण पर्व का शाब्दिक अर्थ है–आत्मा में अवस्थित होना। पर्युषण शब्द परि उपसर्ग व वस् धातु इसमें अन् प्रत्यय लगने से पर्युषण शब्द बनता है। पर्युषण का एक अर्थ है–कर्मों का नाश करना। कर्मरूपी शत्रुओं का नाश होगा तभी आत्मा अपने स्वरूप में अवस्थित होगी अतः यह पर्युषण–पर्व आत्मा का आत्मा में निवास करने की प्रेरणा देता है। यह पर्व मानव–मानव को जोड़ने व मानव हृदय को संशोधित करने का पर्व है, यह मन की खिड़कियों, रोशनदानों व दरवाजों को खोलने का पर्व है।

पर्युषण महापर्व मात्र जैनों का पर्व नहीं है, यह एक सार्वभौम पर्व है। पूरे विश्व के लिए यह एक उत्तम और उत्कृष्ट पर्व है, क्योंकि इसमें आत्मा की उपासना की जाती है। संपूर्ण संसार में यही एक ऐसा उत्सव या पर्व है जिसमें आत्मरत होकर व्यक्ति आत्मार्थी बनता है व अलौकिक, आध्यात्मिक आनंद के शिखर पर आरोहण करता हुआ मोक्षगामी होने का सद्प्रयास करता है। जैनधर्म की त्याग प्रधान संस्कृति में पर्युषण पर्व का अपना अपूर्व एवं विशिष्ट आध्यात्मिक महत्व है। यह एकमात्र आत्मशुद्धि का प्रेरक पर्व है। इसीलिए यह पर्व ही नहीं, महापर्व है। जैन लोगों का सर्वमान्य विशिष्टतम पर्व है। पर्युषण पर्व– जप, तप, साधना, आराधना, उपासना, अनुप्रेक्षा, खाद्य संयम आदि अनेक प्रकार के अनुष्ठानों का अवसर है।

पर्युषण महापर्व आध्यात्मिक पर्व है, इसका जो केन्द्रीय तत्त्व है, वह है–आत्मा। आत्मा के निरामय, ज्योतिर्मय स्वरूप को प्रकट करने में पर्युषण महापर्व अहं भूमिका निभाता रहता है। अध्यात्म यानि आत्मा की सन्निकटता। पर्युषण पर्व जैन एकता का प्रतीक पर्व है। जैन लोग इसे सर्वाधिक महत्व देते हैं। संपूर्ण जैन समाज इस पर्व के अवसर पर जागश्त एवं साधनारत हो जाता है। दिगंबर परंपरा में इसकी ''दशलक्षण पर्व'' के रूप में पहचान है। उनमें इसका प्रारंभिक दिन भाद्रव शुक्ला पंचमी और संपन्नता का दिन चतुर्दशी है। दूसरी तरफ श्वेतांबर जैन परंपरा में भाद्रव शुक्ला पंचमी का दिन समाधि का दिन होता है। जिसे संवत्सरी के रूप में पूर्ण त्याग–प्रत्याख्यान, उपवास, पौषध सामायिक, स्वाध्याय और संयम से मनाया जाता है। वर्ष भर में कभी समय नहीं निकाल पाने वाले लोग भी इस दिन जागश्त हो जाते हैं। कभी उपवास नहीं करने वाले भी इस दिन धर्मानुष्ठान करते नजर आते हैं। पर्युषण महापर्व–कषाय शमन का पर्व है। धर्म के 10 द्वार बताए हैं उसमें पहला द्वार है–क्षमा। क्षमा यानि समता। क्षमा जीवन के लिए बहुत जरूरी है जब तक जीवन में क्षमा नहीं तब तक व्यक्ति अध्यात्म के पथ पर नहीं बढ़ सकता। भगवान महावीर ने क्षमा यानि समता का जीवन जीया। वे चाहे कैसी भी परिस्थिति आई हो, सभी परिस्थितियों में सम रहे। ''क्षमा वीरो का भूषण है''–महान् व्यक्ति ही क्षमा ले व दे सकते हैं। पर्युषण पर्व क्षमा के आदान–प्रदान का पर्व है। इस दिन सभी अपनी मन की उलझी हुई ग्रंथियों को सुलझाते हैं, अपने भीतर की राग–द्वेष की गांठों को खोलते हैं वह एक दूसरे से गले मिलते हैं। पूर्व में हुई भूलों को क्षमा के द्वारा समाप्त करते हैं व जीवन को पवित्र बनाते हैं।

पर्युषण महापर्व का समापन मैत्री दिवस के रूप में आयोजित होता है, जिसे क्षमापना दिवस भी कहा जाता है। इस तरह से पर्युषण महापर्व एवं क्षमापना दिवस– यह एक दूसरे को निकटता में लाने का पर्व है। यह एक दूसरे को अपने ही समान समझने का पर्व है। गीता में भी कहा है–'आत्मौपम्येन सर्वत्रः समे पश्यति योर्जुन''–'श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा–हे अर्जुन! प्राणीमात्र को अपने तुल्य समझो। भगवान महावीर ने कहा–''मित्ती में सव्व भूएसु, वेरंमज्झण केणइ''सभी प्राणियों के साथ मेरी मैत्री है, किसी के साथ वैर नहीं है।

मानवीय एकता, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व, मैत्री, शोषणविहीन सामाजिकता, अंतर्राष्ट्रीय नैतिक मूल्यों की स्थापना, अहिंसक जीवन आत्मा की उपासना शैली का समर्थन आदि तत्त्व पर्युषण महापर्व के मुख्य आधार हैं। ये तत्त्व जन–जन के जीवन का अंग बन सके, इस दृष्टि से इस महापर्व को जन–जन का पर्व बनाने के प्रयासों की अपेक्षा है। मनुष्य धार्मिक कहलाए या नहीं, आत्म–परमात्मा में विश्वास करे या नहीं, पूर्वजन्म और पुनर्जन्म को माने या नहीं, अपनी किसी भी समस्या के समाधान में जहाँ तक संभव हो, अहिंसा का सहारा ले– यही पयुर्षण की साधना का हार्द है। हिंसा से किसी भी समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सकता। हिंसा से समाधान चाहने वालों ने समस्या को अधिक उकसाया है। इस तथ्य को सामने रखकर जैन समाज ही नहीं आम–जन भी अहिंसा की शक्ति के प्रति आस्थावान बने और गहरी आस्था के साथ उसका प्रयोग भी करे।

पर्युषण आत्मा में रमण का पर्व है, आत्मशोधन व आत्मोत्थान का पर्व है। यह पर्व अहंकार और ममकार का विसर्जन करने का पर्व है। यह पर्व अहिंसा की आराधना का पर्व है। आज पूरे विश्व को सबसे ज्यादा जरूरत है अहिंसा की, मैत्री की। यह पर्व अहिंसा और मैत्री का पर्व है। अहिंसा और मैत्री के द्वारा ही शांति मिल सकती है। आज जो हिंसा, आतंक, आपसी–द्वेष, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, कोरोना महामारी जैसी ज्वलंत समस्याएं न केवल देश के लिए बल्कि दुनिया के लिए चिंता का बड़ा कारण बनी हुई है और सभी कोई इन समस्याओं का समाधान चाहते हैं। उन लोगों के लिए पर्युषण पर्व एक प्रेरणा है, पाथेय है, मार्गदर्शन है और अहिंसक जीवन शैली का प्रयोग है। आज भौतिकता की चकाचौंध में, भागती जिंदगी की अंधी दौड़ में इस पर्व की प्रासंगिकता बनाये रखना ज्यादा जरूरी है। इसके लिए जैन समाज संवेदनशील बने विशेषतः युवा पीढ़ी पर्युषण पर्व की मूल्यवत्ता से परिचित हो और वे सामायिक, मौन, जप, ध्यान, स्वाध्याय, आहार संयम, इन्द्रिय निग्रह, जीवदया आदि के माध्यम से आत्मचेतना को जगाने वाले इन दुर्लभ क्षणों से स्वयं लाभान्वित हो और जन–जन के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत करे।

अधिशासी अभियंता रणवीर सिंह ने कहा उपभोक्ताओं का उत्पीड़न कर ब्लैकमेल ना करें संविदा कर्मी

अवध की आवाज, ब्यूरो

गोंडा। संविदा कर्मियों की हड़ताल से इस भीषण गर्मी में

आम उपभोक्ता हो रहे हैं परेशान जिससे उन्हें कतई सही नहीं कहा जा सकता है उन्हें कोई समस्या है तो जायज मांग है उस पर विभाग जरूर विचार करेगा यह बातें वितरण खंड 2 के अधिशासी अभियंता रणवीर सिंह ने कहा गर्मी के समय इस भीषण गर्मी के समय संविदा कर्मियों की हड़ताल गैर जरूरी बताते हुए कहा कि संविदा कर्मी को ऐसा नहीं करना चाहिए इस तरह कार्य करने से उनकी वजह से किसी भी जगह फाल्ट और अंशु रूप से सही नहीं कहा जा सकता जिसके कारण आम जनों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है जो किसी भी तरह विभाग बर्दाश्त नहीं करेगा उन्होंने आगे कहते हुए कहा कि जो उचित मांग हो उसे उसे ही अधिकारियों या विभाग के समक्ष रखनी चाहिए जिससे उनकी समस्याओं का निराकरण हो सके इस प्रकार से अधिशासी अभियंता रणवीर सिंह ने कहा कि यदि उपभोक्ताओं को परेशान करके और विभाग को ब्लैकमेल करने का कोशिश करेंगे तो यह निश्चित है कि उन पर विभाग द्वारा कार्रवाई की जाएगी इस प्रकार की हरकतों आदतों में सुधार करना चाहिए।

सारे पुलिस अफसर एक जैसे नही होते ये साबित कर दिया इन तस्वीरों ने,पुलिस वाले अच्छे होते हैं

अवध की आवाज

निघासन खीरी। वैसे तो यूपी पुलिस पर तमाम तरह के आरोप लगते रहतें पर इसी बीच दो तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। एक तस्वीर में एक बूढ़ी मां और एक यूपी पुलिस का दरोगा

साथ मे बैठे हुये हैं और बूढ़ी मां दरोगा जी के सर पर हाँथ रख आशिर्वाद दे रही हैं। दूसरी तस्वीर निघासन कोतवाली इलाके की है जिसमें दरोगा गोदी में एक किशोर के शव को लिये दिख रही हैं। दर असल पहली तस्वीर लखीमपुर खीरी में तैनात दरोगा मो0 नासिर कुरैशी की बताई जा रही हैं। जब इस वायरल तस्वीर के बावत में जानकारी ली गई तो पता चला कि एक बूढ़ी मां लखीमपुर के विलोबी हाल के आसपास घूम रही थी। जब दरोगा की नजर बेसहारा घूम रही बूढ़ी मां पर पड़ी तो दरोगा ने बूढ़ी मां से उनका हाल जाना और उन्हें खाना खिला कर कुछ पैसे दिये इस दौरान बूढ़ी मां की आंखो में से प्रसन्नता के आंसू छलक पड़े और दरोगा को ढेर सारी दुआएं दी। वहीं दूसरी तस्वीर निघासन कोतवाली में तैनात दरोगा अजीत कुमार की बताई जा रही है जिसमे दरोगा अजीत कुमार एक किशोर के शव को अपनी गोदी में लिये दिख रहे हैं। दर असल कोतवाली इलाके के गांव बम्हन पूर से एक किशोर साथियों संग नदी में नहाने गया था जो कल से लापता था। 24 घन्टे बीत जाने के बाद भी जब लापता किशोर का का कोई पता नही चला तो किशोर की तलाश में दरोगा अजीत कुमार व कांस्टेबल अभिषेक मिश्रा अपनी जान की परवाह किये बगैर गोता खोरों संग नदी में कूद गए ,व लापता किशोर के शव को नदी से खोज निकाला।

नगर पंचायत बीकापुर के बाजार में रजिस्ट्री कार्यालय के सामने जहरीले सांप ने एक महिला को कांटा महिला की हुई मृत्यु के हुए

अवध की आवाज

गोंडा। किसी ने सच ही कहा है की होनी है सो हो सके अनहोनी नहीं हुए, इस धरती पर जिस भी प्राणी का आगमन हुआ है यह निश्चित है कि उसको इस संसार को

छोड़कर जाना है लेकिन एक समय होता है जब वह प्राणी अपनी अवस्था के अनुसार इस संसार से विदा होता है तब और बात होती है कम कष्ट होता है परिवार को लेकिन यदि आधे व्यवस्था में ऐसी घटना घटित होती है तो यह सत्य है कि परिवार पर पहाड़ टूट पड़ता है। जैसा कि नगर पंचायत बीकापुर बाजार में रजिस्ट्री कार्यालय के सामने स्थित गुप्ता क्लाथ हाउस मे सोयी दुकान मालिक की पत्नी को काटकर मौत के घाट उतारने वाले जहरीले नाग नागिन को सपेरा ने काफी प्रयास के बाद पकड़ लिया जिससे अगल बगल रहने वाले परिवार और दुकानदारों का भय समाप्त हो गया !दुकानदार दिनेश गुप्ता की पत्नी उषा देवी 40 को गत 31 अगस्त की रात नाग ने काटकर मौत की नीद सुला दिया था । पकड़े गये जोड़े नाग नागिन को देखने के लिए रजिस्ट्री कार्यालय के दस्ताबेज लेखको सहित मुहल्ले के लोगो की भारी भीड़ जमा रही। इन नाग नागिन के आतंक से मुहल्ले के लोग भी भयभीत रहा करते थे। इस मुहल्ले के अंकित गुप्ता गुड्डू मिश्र राहुल गुप्ता हिमांशु गुप्ता डीपी कल्लू सहित अन्य लोगो ने राहत की सास ली हैं।

अवध की आवाज ब्यूरो

कानपुर। उत्तर प्रदेश राजधानी लखनऊ में प्रदेश काँग्रेस कार्यालय में आयोजित परिवर्तन संकल्प सम्मेलन में अल्पसंख्यक विभाग के राष्ट्रीय चेयरमैन इमरान प्रतापगढ़ी ,प्रदेश अध्यक्ष ,अजय कुमार लल्लू , अल्पसंख्यक विभाग के प्रदेश चेयरमैन , शाहनवाज आलम , के साथ में उत्तर प्रदेश से हर जिले से हजारों की संख्या में अल्पसंख्यक विभाग के काँग्रेस जन शामिल हुये। कानपुर मंडल से नोशाद आलम मंसूरी नगर अध्यक्ष कानपुर उत्तरी ,इखलाख अहमद डेविड प्रदेश कॉर्डिनेटर , मो ,जावेद चेयरमैन , निसार अहमद सिद्दीकी चेयरमैन ,मो ,अशरफ कुरैशी ,चेयरमैन ,तुफैल अहमद खान प्रदेश महासचिव उत्तर प्रदेश काँग्रेस कमेटी अल्पसंख्यक विभाग। राजीव द्विवेदी एडवोकेट , नरेंद्र चँचल कुशवाहा ,सलीम अहमद , गौरव शर्मा , निसार अहमद , मो ,इमरान फारुखी , राजू शाह , मुमताज अहमद , रिंकज पाल , मो ,मुस्लिम , जाकिर अली , इफ्तिखार अहमद , आदि काँग्रेस जन शामिल रहे।

पांच गर्भवती की हुई गोद भराई, दिए गए जरूरी टिप्स

खानपान में पोषण युक्त खाद्य पदार्थों को शामिल करें– डॉ. आर्या

अवध की आवाज

उरई (जालौन) राष्ट्रीय पोषण माह के अंतर्गत उरई शहर के मोहल्ला शिवपुरी स्थित आंगनवाड़ी केंद्र पर बुधवार को पोषण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान केंद्र को आकर्षक ढंग से सजाया गया था। कार्यक्रम में पांच गर्भवती की गोद भराई की रस्म पूरी करने के साथ उन्हें जरूरी टिप्स भी दिए गए मुख्य अतिथि क्षेत्रीय आयुर्वेदिक यूनानी अधिकारी डा. एमडी आर्या ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया । उन्होंने कहा कि सरकार कुपोषण के खिलाफ अभियान चला रही है। इसके लिए ही सितंबर माह को पोषण माह के रुप में मनाया जा रहा है। हमें अपने खानपान पर विशेष ध्यान देना है। गर्भवती और धात्री को ऐसा भोजन करना चाहिए कि उन्हें खुद भी पोषण मिले और उनके बच्चों को भी पोषक तत्व मिल सके। राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय के चिकित्साधिकारी डा. आरके गुप्ता ने कहा कि आयुर्वेद में भी कई ऐसी दवाएं हैं, जो शरीर को पोषक तत्व प्रदान करती हैं । स्वस्थ रहने के लिए खानपान पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। तले, भुने पदार्थों को खाने से गर्भवती परहेज करें। भोजन में ऐसे पदार्थों को शामिल करें जिसमें पोषक तत्व हों । योग प्रशिक्षक डॉ रमन कुमार दीक्षित व महिला योग प्रशिक्षक श्रद्धा दुबे ने योग का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि योग सबके लिए जरूरी है, लेकिन गर्भवती को योग करते समय खास ध्यान देने की जरूरत है। ऐसा कोई योग न करें, जिससे परेशानी हो। उन्होंने कहा कि गर्भवती योग प्रशिक्षक की सलाह के बाद ही योग करें। बाल विकास परियोजना अधिकारी विमलेश आर्या ने कहा कि भोजन में दालें, अंकुरित भोजन, हरी पत्तेदार सब्जियों का सेवन करें। ऐसे पदार्थों का सेवन करें, जिनमें प्रोटीन और विटामिन सी के स्रोत ज्यादा हों । इसके बाद अधिकारियों ने आंगनबाड़ी केंद्र पर बनाई गई पोषण वाटिका को देखा और आंगनबाड़ी कार्यकर्ता रानी, रेशमा, किरन की सराहना की। कार्यक्रम में आई सुमन, ज्योति, रश्मि, अनुराधा, संगीता आदि महिलाओं ने कहा कि आज इस शिविर में बहुत सीख मिली। विशेष रुप से खानपान के बारे

में जानकारी मिली। सबसे अच्छी बात स्वास्थ्य कैंप में आकर डाक्टर को दिखा लिया और दवा भी मिल गई। इस दौरान देविका रानी, प्रतिभा सिंह, शशि आदि मौजूद रहीं । शिविर में की गई जांच आयुर्वेद और योग विभाग की ओर से शिविर लगाकर कार्यक्रम में आई महिलाओं व बच्चों की जांच की गई और उन्हें स्वस्थ रहने के उपाय भी बताए गए। डा. मनीष सचान, डा. रश्मि वशिष्ठ, डा प्रखर चौबे ने महिला व बच्चों की जांच की। शिविर में 94 लोगों की जांच की गई, जिसमें सात महिलाओं में रक्त की कमी पाई गई। डाक्टरों ने उन्हें खानपान में सुधार की सलाह देकर दवाएं दी। महिलाओं व बच्चों का वजन लिया गया और महिलाओं के ब्लड शुगर की जांच की गई।

भारतीय किसान संगठन द्वारा आयोजित किया गया धरना

संगठन पदाधिकारियों ने धरना प्रर्दशन की अनुमति भी नहीं ली प्रशासन से

अवध की आवाज

उरई (जालौन) भारतीय किसान संगठन द्वारा आज बुधवार को बगैर प्रशासन की अनुमति के कलेक्ट्रेट पहुंच कर धरना प्रर्दशन शुरु कर दिया धरना प्रर्दशन में बमुश्किल दो दर्जन ही सरकार के फसली और असली किसान नजर आये। किसानों के समर्थन में आयोजित धरना प्रर्दशन को सम्बोधित संगठन के प्रदेश अध्यक्ष साहब सिंह चौहान एवं जिलाध्यक्ष अरुण कुमार सक्सेना ने कहा कि किसानों की उपज का लागत मूल्य के आधार पर लाभकारी मूल्य दिये जाने की मांग सरकार से उठाई है ।इसके उपरांत चार सूत्रीय मांग पत्र प्रधानमंत्री को सम्बोधित एवं 11 सूत्रीय मांगपत्र मुख्यमंत्री को सम्बोधित के अलावा 12 सूत्रीय मांगपत्र जनपद की समस्याओं को लेकर अतिरिक्त मजिस्ट्रेट को भेंट किया। धरना प्रर्दशन में प्रमुख रूप से संजीव कुमार तिवारी, आनंद द्विवेदी जिला उपाध्यक्ष, महेंद्र कुमार, शिवराज सिंह निरंजन जिला मंत्री भाकि संघ, कमल सिंह यादव, उमेश बाबू सहित बमुश्किल दो दर्जन लोग मौजूद रहे। कुरसेंड़ा, जगदीश पाल पतराही, जगदीश राठौर राम कुमार राठौर जगम्मनपुर, राम गोपाल राठौर हुसेपुरा, योगेश प्रधान हुसेपुरा, भूरे

प्रजापति, नरेश परिहार, ताहर सिंह यादव, महेश यादव भिटौरा,अंकित याज्ञिक ,नरेश सिंह चंदेल, नरेंद्र सिंह चंदेल गंधर्व सिंह धूता, नरेंद्र सिंह चंदेल, नत्थू खा, रघुवंशी छौना, सुरेन्द्र प्रधान छौना आदि सम्मिलित रहे।

अशोक राठौर ने प्रारम्भ की दस दिवसीय समाजवादी जनसंदेश यात्रा

अवध की आवाज

उरई (जालौन) समाजवादी पार्टी की दस दिवसीय जनसंदेश यात्रा के प्रथम चरण के अभियान में प्रथम दिन आज अशोक राठौर ने जगम्मनपुर, हमीरपुरा, हुसेपुरा, छौना, मानपुरा एवं ऊमरी का भ्रमण किया। जहां जन समुदाय से बैठक कर पार्टियों की नीतियों

से उन्हें अवगत कराया गया तथा बैठक में प्रत्येक बूथ पर यह समीक्षा की गई कि अभी तक कितने नवयुवक या नवयुवतियां विधानसभा में मतदाता नहीं हैं। नवीन मतदाताओं को जोड़ने हेतु फार्म संख्या 6 भरकर उन्हें मतदाता सूची में अपना वोट बनवाने के लिए प्रेरित किया गया साथ ही समाजवादी पार्टी का झंडा लोगों को देते हुए उन्हें उनके आवासों पर लगवाया गया। लोगों ने 2022 के चुनाव में समाज वादी पार्टी को अपना पूरा समर्थन देने का आश्वासन दिया। आज संपर्क के दौरान अशोक राठौर के साथ आकाश राठौर, संतराम राठौर रामपुरा, बबलू छौना, कमलेश राठौर बोहदपुरा, नरेंद्र राठौर सिहारी, अर्जुन राठौर जगम्मनपुर, सुरेंद्र सिंह सेंगर हदरुख, मिट्ठू लाल हुसेपुरा, दीपू सेंगर कुरसेंड़ा, जगदीश पाल पतराही, जगदीश राठौर राम कुमार राठौर जगम्मनपुर, राम गोपाल राठौर हुसेपुरा, योगेश प्रधान हुसेपुरा, भूरे प्रजापति, नरेश परिहार, ताहर सिंह यादव, महेश यादव भिटौरा,अंकित याज्ञिक ,नरेश सिंह चंदेल, नरेंद्र सिंह चंदेल गंधर्व सिंह धूता, नरेंद्र सिंह चंदेल, नत्थू खा, रघुवंशी छौना, सुरेन्द्र प्रधान छौना आदि सम्मिलित रहे।

आखिर क्यों है ग्रामीण इलाकों के लोगो को झोलाछाप डॉक्टरों पर भरोसा

ग्रामीण इलाकों में झोलाछाप डॉक्टरों की भरमार पैसे के लिए कर देते सारे शरीर का चेकप जबकि नही है कोई जानकारी

अवध की आवाज

पिरौना (जालौन) स्वास्थ्य विभाग की लापरवाही के चलते ग्रामीण क्षेत्रों में झोलाछाप डॉक्टरों के खिलाफ कार्रवाई नहीं हो पा रही है इसकी वजह से उनका धंधा धड़ल्ले से चल रहा है झोलाछाप डॉक्टरों के हौंसले बुलंद मरीजों की जान से कर रहे खिलवाड़ इनमें से किसी भी चिकित्सक की मौके पर पहुंचकर न तो जांच की जाती और न ही उनके प्रमाणपत्रों की पड़ताल की जाती है जालौन जिले में गांव–गांव में झोलाछाप डॉक्टरों की भरमार है। चाय की गुमटियों जैसी दुकानों में झोलाछाप डॉक्टर मरीजों का इलाज कर रहे हैं। मरीज चाहे उल्टी, दस्त, खांसी, बुखार से पीड़ित हो या फिर अन्य कोई बीमारी से। सभी बीमारियों का इलाज यह झोलाछाप डॉक्टर करने को तैयार हो जाते हैं। खास बात यह है कि अधिकतर झोलाछाप डॉक्टरों की उम्र 15 से 25 साल के बीच है। मरीज की हालत बिगड़ती है तो उससे आनन फानन में जिला अस्पताल भेज दिया जाता है जबकि यह लापरवाही स्वास्थ्य विभाग के आला अधिकारियों की जानकारी में भी है ग्रामीण क्षेत्र पिरौना, जखौली, पिण्डारी, विरगुवा खुर्द, चमारी, हिनहुना, चौतरहाई, जमरोही कला, जमरोहीखुर्द, धमसेनी, विरासनी, मबई, धुरट, सला, छिरावली, गुमावली सहित दर्जनों गांव ऐसे हैं जहां सरकारी स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध होने के बाद भी झोलाछाप डॉक्टरों की भरमार हैं। वहीं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर सुविधाएं नहीं हैं। इसका फायदा सीधे तौर पर झोलाछाप डॉक्टर उठा रहे हैं गांव के लोगो के अनुसार गांव में सरकारी इलाज की सुविधा नहीं है बीमार होने पर झोलाछाप डॉक्टरों से ही इलाज कराना पड़ता है बिना लाइसेंस के दवाओं का भंडारण भी करते हैं डॉक्टर झोलाछाप चिकित्सकों द्वारा बिना पंजीयन के एलोपैथी चिकित्सा व्यवसाय ही नहीं किया जा रहा है। बल्कि बिना ड्रग लाइसेंस के दवाओं का भंडारण व विक्रय भी अवैध रूप से किया जा रहा है। दुकानों के भीतर कार्टून में दवाओं का अवैध तरीके से भंडारण रहता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य विभाग द्वारा कई सालों से अवैध रूप से चिकित्सा व्यवसाय कर रहे लोगों के खिलाफ किसी तरह की कार्रवाई नहीं की गई। इन दिनों मौसमी बीमारियों जैसे बुखार, डेंगू,कोरोना जैसी बीमारी का कहर है। झोलाछाप डॉक्टरों की दुकानें मरीजों से भरी पड़ी हैं। गर्मी व तपन बढ़ने के कारण इन दिनो उल्टी, दस्त, बुखार जैसी बीमारियां ज्यादा पनप रही हैं। झोलाछाप इन मर्जों का इलाज ग्लूकोज की बोतलें लगाने से शुरू करते हैं। एक बोतल चढ़ाने के लिए इनकी फीस 150 से 250 रुपए तक होती है।

स्वास्थ्य विभाग नही करता कोई कार्यवाही

झोलाछाप डॉक्टरों की वजह से अब तक कई लोगों की असमय जान चली गई है लेकिन अभी तक स्वास्थ्य विभाग ने स्थाई तौर पर झोलाछाप डॉक्टरों पर कार्रवाई नहीं की झोलाछाप डॉक्टर मरीजों की जान से खिलवाड़ कर रहे हैं और प्रशासन दूर से ही इन्हें देख रहा है।

केस बिगड़ने पर जिलाअस्पताल रैफर कर देते मरीज

बीते कुछ वर्षों से फर्जी डिग्रीधारी डॉक्टरों की वृद्धि हुई है। ग्रामीण क्षेत्र में कोई मात्र फर्स्ट एड के डिग्रीधारी हैं तो कोई अपने आप को बवासीर या दंत चिकित्सक बता रहा है लेकिन इनके निजी क्लीनिकों में लगभग सभी गंभीर बीमारियों का इलाज धड़ल्ले से किया जा रहा है। कुछ डॉक्टरों ने तो अपनी क्लिनिक में ही ब्लड जांच, यूरीन जांच इत्यादि की सुविधा भी कर रखी है। शेष पेज 4

ग्राम पंचायत सहायकों की नियुक्ति में गड़बड़ करने वाले गाम प्रधान व पंचायत सचिवों पर दर्ज होगी एफआईआर, डीएम ने दिया अल्टीमेटम

अवध की आवाज ब्यूरो

कहोबा चौराहा गोंडा। ग्राम पंचायतों में ग्राम पंचायत सहायक पद की नियुक्ति के मामले में ग्राम प्रधान व पंचायत सचिव द्वारा गड़बड़ी किए जाने की विभिन्न स्तरों से आ रही शिकायतों का संज्ञान लेते हुए डीएम मार्कण्डेय शाही ने सख्त आदेश जारी कर स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि किसी भी ग्राम प्रधान द्वारा नियमों का उल्लंघन या पक्षपात कर नियुक्ति करने की शिकायत सही पाई जाएगी तो सम्बन्धित ग्राम प्रधान के साथ–साथ वहां के पंचायत सचिव के विरूद्ध नामजद एफआईआर दर्ज कराई जाएगी। जिलाधिकारी ने कहा कि नियुक्ति प्रक्रिया में पूरी पारदर्शिता बरतने के साथ नियमों व मानकों का पूरा अनुपालन सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए गए हैं। इसलिए इसमें यदि किसी भी ग्राम प्रधान द्वारा नियमों को दरकिनार करके नियुक्ति की गई तो वह प्रधान व पंचायत सचिव कठोर कार्यवाही के लिए तैयार रहे। उन्होंने कहा कि नियुक्ति में यदि मानक व नियमों का विचलन हुआ तो ग्राम प्रधान व पंचायत सचिव की व्यक्तिगत जिम्मेदारी तय की जाएगी।

अक्षय कुमार की मां का निधन

मुंबई, (वेब वार्ता)। मुंबई के एक अस्पताल में भर्ती अभिनेता अक्षय कुमार की मां अरुणा भाटिया का बुधवार को सुबह निधन हो गया। अक्षय कुमार (53) ने ट्विटर पर यह जानकारी दी और अपनी मां को श्रद्धांजलि दी। अभिनेता

की मां हीरानंदानी अस्पताल की गहन चिकित्सा इकाई (आईसीयू) में भर्ती थीं। उनके निधन का कारण अभी ज्ञात नहीं है। 'बेल बॉटम' के अभिनेता ने ट्वीट किया, ''वह मेरी जिंदगी का अहम हिस्सा थीं। आज मुझे असहनीय पीड़ा महसूस हो रही है। मेरी मां अरुणा भाटिया ने आज सुबह इस दुनिया को अलविदा कह दिया और परलोक में मेरे पिता के पास चली गईं।'' अभिनेता ने कहा, ''मैं आपकी दुआओं का सम्मान करता हूं। मैं और मेरा परिवार मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं। ओम शांति। कुमार ने मंगलवार रात को माइक्रो ब्लॉगिंग साइट पर उनकी मां के अच्छे स्वास्थ्य के लिए दुआ मांगने वाले शुभचिंतकों को धन्यवाद दिया था। अपनी मां के अस्पताल में भर्ती होने की सूचना पाकर अभिनेता सोमवार को देश लौटे। वह ब्रिटेन में अपनी आगामी फिल्म 'सिंड्रेला' की शूटिंग कर रहे थे।

अजय देवगन ने ओंकारा, दृश्यम के बाद प्रोडक्शन हाउस का म्यूजिक लेबल किया लॉन्च

मुंबई, (वेब वार्ता)। पैनोरमा स्टूडियोज, रेड, ओंकारा, खुदा हाफिज और दृश्यम जैसी प्रशंसित फिल्मों के निर्माताओं ने संगीत में विविधता लाई है। अभिनेता–फिल्म निर्माता अजय देवगन ने मंगलवार को पैनोरमा म्यूजिक लॉन्च किया। सुस्थापित संगीत उद्योग के कार्यकारी, राजेश मेनन के नेतश्त्व में लेबल, ओरिजनल सिंगल, फिल्म म्यूजिक, स्वतंत्र संगीत और क्षेत्रीय कंटेंट तैयार करेंगे। उभरते संगीतकारों और कलाकारों को एक मंच देने के इरादे से क्षेत्रीय कंटेंट पर धयान केंद्रित करेंगे और हिंदी में भक्ति और सूफी संगीत और गजल शामिल करेंगे। लेबल को लॉन्च करते हुए, देवगन ने कहा, संगीत में मेरी हमेशा रुचि रही है। डिजिटल माध्यम ने हमारे जीवन में अनेक संगीत की संभावनाएं दी हैं। भारत की समश्द्ध संगीत संस्कृति के पहलुओं को अभी तक खोजा नहीं जा सका है और उन्हें उम्मीद है कि ये संगीत का लेबल भर जाएगा। देवगन के प्रबंधक और फिल्म निर्माता कुमार मंगत पाठक और निर्माता–निर्देशक अभिषेक

पाठक म्यूजिक लेबल के फ्रंटमैन हैं। संगीत लेबल के उद्देश्यों को बताते हुए अभिषेक ने कहा, हम वो संगीत बनाना चाहते हैं जो भारत के लिए एक अद्वितीय ध्वनि स्थान स्थापित करें और मेनन ने कहा, हम गुणवत्तापूर्ण संगीत बनाने और लोगों के दिलों को छूने की उम्मीद करते हैं। जैसे पैनोरमा की फिल्में कर रही हैं।

असम के स्कूल के शिक्षक ने किया बिग बी से मिलने का सपना पूराय केबीसी १३ पर जीते २५ लाख रुपये

मुंबई, (वेब वार्ता)। बिग बी के साथ एयर टाइम शेयर करने और 25 लाख रुपये के चेक के साथ घर वापस जाने से ज्यादा सपने के सच होने के करीब कुछ भी नहीं हो सकता है। कौन बनेगा करोड़पति (केबीसी) 13 में तुषार भारद्वाज के साथ ठीक ऐसा ही हुआ। अपने अनुभव को साझा करते हुए, एक स्कूल शिक्षक, तुषार भारद्वाज, जो तेजपुर में असम वैली बोर्डिंग स्कूल में गतिविधियों के डीन भी हैं, उन्होंने कहा, जब मैं हॉटसीट पर था और मिस्टर बच्चन के सामने उनके साथ बातचीत कर रहा था, तो यह एक सपने जैसा था। शो में भारद्वाज के लिए शो में आने का मुख्य मकसद बिग बी से मिलना था। स्कूल के जिम में रोजाना वर्कआउट करने वाले फिटनेस फ्रीक बाइक लवर भी हैं। शादी के बाद भी बाइक उनका पहला प्यार बनी हुई है। जिस चीज ने मुझे खुशी दी वह जगह बनाना मेरा सपना था और अब जब मैंने इसे कर लिया, तो यह अवास्तविक लगता है। यह केवल मेरे लिए जीतने वाली राशि के बारे में नहीं था। मिस्टर बच्चन से मिलने था और यह बहुत सुखद पल था। इतने सारे राउंड खेलना और 25 लाख रुपये जीतना मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। और फिर, एक अच्छे पति

की तरह, उन्होंने अपनी सफलता का पूरा श्रेय अपनी पत्नी को दिया, उन्होंने मेरा पूरा साथ दिया। जैसा कि कहा जाता हैं, हर सफल आदमी के पीछे एक महिला का हाथ होता है। कौन बनेगा करोड़पति 13 सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन पर प्रसारित होता है।

गुनीत शर्मा ने सुल्तान, दंगल देखकर सीखा हरियाणवी लहजा

मुंबई, (वेब वार्ता)। कॉमेडी टेलीविजन सीरीज तेरा यार हूं मैं में नए–नए प्रवेश करने वाले अभिनेता गुनीत शर्मा ने खुलासा किया है कि वह सुल्तान और दंगल जैसी बॉलीवुड फिल्में देखकर अपने चरित्र के लिए आवश्यक हरियाणवी उच्चारण सीख रहे हैं। गुनीत ने कहा, मूल रूप से मैं जालंधर, पंजाब से ताल्लुक रखता हूं। इसलिए मैं पंजाबी, हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में बोल सकता हूं। मेरा किरदार हुड्डा बातचीत में हरियाणवी लहजे की मांग करता है। इसलिए मैंने सुल्तान और दंगल जैसी फिल्में देखकर बात करने के उस हरियाणवी तरीके को अपनाने की कोशिश की। अभिनेता ने तेरा यार हूं मैं में अपने चरित्र पर प्रकाश डालते हुए कहा, मैं एक हरियाणवी कॉलेज के लड़के की भूमिका निभा रहा हूं, जिसका नाम हुड्डा है। वह एक मजेदार प्रेमी है। साथ ही, वह हमेशा कॉलेज में अपने जूनियर्स से लड़ने, उन्हें धमकाने और चिढ़ाने की वजह

खोजता रहता है। अभिनेता का कहना है कि वह इस भूमिका को निभाने के लिए एक वास्तविक व्यक्ति से प्रेरणा लेते हैं। गुनीत ने कहा, मेरे गश्हनगर के समाज में सोनू नाम का एक लड़का है। उसका चरित्र हुड्डा जैसा है। वास्तव में, जब मुझे हुड्डा के चरित्र के बारे में जानकारी मिली, तो मेरे दिमाग में जो तत्काल नाम आया, वह सोनू था। मैंने बात करने और उसके चलने की शैली की नकल करने की कोशिश की। शशि सुमीत प्रोडक्शंस के सहयोग बनी सीरीज तेरा यार हूं मैं सोनी सब पर प्रसारित होती है।

पवित्र रिश्ता में अपने किरदार को लेकर शहीर शेख ने की बात

मुंबई, (वेब वार्ता)। अभिनेता शहीर शेख पवित्र रिश्ता 2.0 में मानव की भूमिका निभाते नजर आएंगे, जो मूल रूप से दिवंगत अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत और बाद में हितेन तेजवानी द्वारा

निभाया गया एक चरित्र है। भूमिका के लिए उन्होंने कैसे तैयारी की, इस बारे में बात करते हुए, शहीर ने कहा, मानव, मुझे लगता है कि यह अब तक के सबसे शुद्ध और ईमानदार चरित्रों में से एक है। यह आपको अच्छा इंसान बनने के लिए प्रेरित करता है और यह आपको विश्वास दिलाता है कि आज के समय में और आज की पीढ़ी में भी ऐसे लोग होते हैं। उन्होंने कहा कि मानव को समझने के लिए उन्हें खुद को मानसिक रूप से समझाना पड़ा। शहीर ने कहा कि इस किरदार में ढलने के लिए मुझे मानसिक रूप से खुद को समझाना पड़ा, मानव को समझना पड़ा और मेकर्स के विजन को समझना पड़ा। इसलिए मैंने बहुत सी बातों को धयान में रखते हुए इस किरदार के लिए तैयारी करने की कोशिश की है। पवित्र रिश्ता पहली बार 2009 में प्रसारित हुआ था। इसे बालाजी टेलीफिल्म्स की एकता कपूर ने प्रोड्यूस किया है। 2020 में, जी टीवी पर सीरियल का पुनः प्रसारण किया गया था।

नीतीश ने सदानंद सिंह के निधन पर जताया शोक, राजकीय सम्मान से होगा अंतिम संस्कार

पटना, (वेब वार्ता)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष एवं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सदानंद सिंह के निधन पर गहरी शोक–संवेदना व्यक्त की है। श्री कुमार ने बुधवार को अपने शोक संदेश में कहा कि स्व. सिंह अनुभवी राजनेता थे। वह अपने क्षेत्र में लोगों के बीच काफी लोकप्रिय थे। उन्होंने अपने व्यक्तित्व की बदौलत समाज के सभी वर्गों का आदर और सम्मान प्राप्त किया। उन्होंने भागलपुर की कहलगांव सीट का नौ बार प्रतिनिधित्व किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्व. सिंह वर्ष 2000 से 2005 तक बिहार विधानसभा का अध्यक्ष भी रहे थे। वह बिहार सरकार में सिंचाई और ऊर्जा मंत्री भी रहे थे। उन्होंने कहा, उनसे मेरा व्यक्तिगत संबंध था। उनके निधन से मैं मर्माहत हूं। बिहार की राजनीति में उनका अहम योगदान था। उनके निधन से सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में अपूरणीय क्षति हुई है। श्री कुमार ने स्व. सिंह के पुत्र शुभानंद मुकेश से दूरभाष पर बात कर उन्हें सांत्वना दी। स्व. सिंह का अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने दिवंगत आत्मा की चिर शांति तथा उनके परिजनों को दुख की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

ऑस्ट्रेलियाई उच्च न्यायालय का फैसला, फेसबुक पेज पर टिप्पणियों के लिए मीडिया कंपनियां जिम्मेदार

कैनबरा, (वेब वार्ता)। ऑस्ट्रेलिया की शीर्ष अदालत ने बुधवार को एक ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए कहा कि मीडिया कंपनियां उनके आधिकारिक फेसबुक पेज पर तीसरे पक्षों द्वारा लिखी गई टिप्पणियों के लिए जिम्मेदार हैं। उच्च न्यायालय ने इस बारे में ऑस्ट्रेलिया के कुछ बड़े मीडिया कंपनियोंकृफेयरफैक्स मीडिया पब्लिकेशंस, नेशनवाइड न्यूज और आस्ट्रेलियन न्यूज चौनल की दलीलों को खारिज करते हुए कहा कि वे टिप्पणियों की 'प्रकाशक' हैं। अदालत ने मीडिया कंपनियों के खिलाफ 5–2 मत से फैसला दिया। अदालत ने कहा कि मीडिया कंपनियों ने इस टिप्पणियों को प्रोत्साहन दिया और वे पूरी बातचीत में शामिल रहीं। इस फैसले के बाद पूर्व में हिरासत में लिए नाबालिग डायलैन वॉलर इन मीडिया संगठनों के खिलाफ अवमानना का मामला चला सकता है। वॉलर ने द सिडनी मॉर्निंग हेरल्ड, द ऑस्ट्रेलियन, सेंट्रेलियन एडवोकेट, स्काई न्यूज ऑस्ट्रेलिया और द बोल्ट रिपोर्ट जैसे टेलीविजन प्रसारकों तथा समाचार पत्रों के फेसबुक पश्ष्ठों पर टिप्पणियों के खिलाफ अवमानना का मामला चलाने की अपील की थी। वॉलर का अवमानना का मामला न्यू साउथ वेल्स राज्य सुप्रीम कोर्ट में 2017 में रोक दिया गया था। उस समय इस सवाल का जवाब नहीं मिला था कि क्या मीडिया कंपनियां फेसबुक प्रयोगकर्ताओं की टिप्पणियों के लिए जिम्मेदार हैं। इन कंपनियों ने वॉलर के नॉर्दर्न क्षेत्र के नाबालिग हिरासत केंद्र में बिताए गए समय से संबंधित रिपोर्ट प्रकाशित की थी। उसके बाद फेसबुक प्रयोगकर्ताओं ने वॉलर के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणियां की थीं। इस बारे में फेसबुक ने तत्काल कोई टिप्पणी नहीं की है।

प्रधानमंत्री 14 को जाट राजा महेन्द्र प्रताप सिंह विघवविद्यालय का करेंगे घिलान्यास

अलीगढ़, (वेब वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 14 सितम्बर को अलीगढ़ में जाट राजा महेन्द्र प्रताप सिंह राज्य विश्वविद्यालय का शिलान्यास करेंगे। प्रखर राष्ट्रवादी और समाज सुधारक के रूप में पहचान रखने वाले राजा महेन्द्र प्रताप देश को विभाजन की आग में झोंकने वाले जिन्ना को जहरीला सांप कहा करते थे। उल्लेखनीय है कि राजा महेन्द्र प्रताप सिंह ने 1915 में अफगानिस्तान में भारत की अंतरिम सरकार बनाई थी। उन्होंने 1930 में ही महात्मा गांधी को पत्र लिख कर कहा था कि जिन्ना जहरीला सांप हैं, गले मत लगाइए। ऐसे राष्ट्रभक्त को उचित सम्मान देने के लिए उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने कई फैसले किए हैं। उन्हीं फैसलों के तहत राजा महेन्द्र प्रताप के नाम पर विश्वविद्यालय की स्थापना की जा रही है। राजा महेन्द्र प्रताप (जन्मः 1 दिसम्बर, 1886, मुरसान, उत्तर प्रदेश, मश्त्युः 29 अप्रैल, 1979) एक सच्चे देशभक्त, क्रान्तिकारी, पत्रकार और समाज सुधारक थे। ये 'आर्यन पेशवा' के नाम से प्रसिद्ध थे। राजा महेंद्र प्रताप सिंह हिन्दू –मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। उन्होंने 'अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय' के विस्तार के लिए जमीन दान में दी थी। इसके अलावा 'वश्न्दावन' में 80 एकड़ का एक बाग 'आर्य प्रतिनिधि सभा' को दान में दिया था। आज वहां 'आर्य समाज गुरुकुल' और 'राष्ट्रीय विश्वविद्यालय' है। वे जातिगत छुआछूत के घोर विरोधी और भारतीयों को उच्च शिक्षा देने के पक्षधर थे। इसीलिए वे शैक्षिक संस्थाओं को हमेशा मदद दिया करते थे। उनकी राष्ट्रवादी सोच के कारण कांग्रेस में रहने के बावजूद कुछ कांग्रेसी नेता उन पर आरएसएस का एजेंट होने का आरोप लगाते रहते थे। इसी कारण उनको वह सम्मान नहीं मिला, जिसके वे हकदार थे।

भाजपा नेता के होटल पर छापेमारी, चोरी के हजारों लीटर डीजल सहित 17 गिरफ्तार

इटावा, (वेब वार्ता)। उत्तरप्रदेश के इटावा जनपद में क्राइम ब्रांच टीम पुलिस ने छापेमारी कर डीजल चोरी गैंग पर कार्यवाही की है। पुलिस ने कैबिनेट मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य के करीबी राजीव शाक्य और मनोज शाक्य के होटल पर छापेमारी कर मौके से डेढ़ लाख लीटर डीजल समेत रिलायंस कम्पनी के पांच से अधिक टैंकर समेत 17 लोगों को हिरासत में लिया है। छापेमारी के दौरान होटल संचालक मौके से फरार हो गया है। पकड़े गए लोगों में शामिल टैंकर चालक होटल पर आकर डीजल को चोरी से होटल मालिक को बेचता था। इसके बाद होटल मालिक सत्ता की आड़ में जनपद में बाजार से सस्ते दामों पर दूसरे को तेल बेचने का कोरोबार चलाता था। अपर पुलिस अधीक्षक नगर कपिलदेव सिंह ने बुधवार को बताया कि थाना जसवंतनगर क्षेत्र के अंतर्गत मुखबिर की सूचना पर थाना जसवंतनगर क्षेत्र के अंतर्गत नेशनल हाइवे पर स्थित गुड्डू फौजी ढाबा पर पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर छापेमारी कर डीजल सप्लाई करने वाले टैंकरों से डीजल चोरी कर सस्ते दामों पर डीजल बेचने वाले गैंग के लोगों पर कार्यवाही की है। पुलिस ने मौके से रिलायंस कंपनी के आधा दर्जन से अधिक डीजल टैंकर और 17 लोगों हिरासत में लिया है। मौके से तीन हजार लीटर खुला डीजल और एक लाख लीटर से अधिक टैंकरों में मौजूद डीजल बरामद किया है। पुलिस पूरे गैंग की तह तक जाने के लिए पूछताछ में जुटी है। बताया कि यह डीजल टैंकर कानपुर देहात में रिलायन्स कंपनी के बने आउटवार्ड से डीजल लेकर अन्य जनपदों में सप्लाई के लिए जाते थे और रास्ते में पड़ने वाले इस होटल में रुककर टैंकरों से डीजल चोरी किया जाता था, पिछले कई दिनों से यह व्यापार चल रहा था।

वाहदम ने विभिन्न निवेशकों से १७४ करोड़ रुपये जुटाए

नई दिल्ली, (वेब वार्ता)। प्रीमियम चाय और वेलनेस उत्पाद कंपनी वाहदम इंडिया ने आईआईएफएल, एएमसी निजी इक्विटी कोष सहित विभिन्न निवेशकों से 174 करोड़ रुपये जुटाए हैं। कंपनी इस राशि का इस्तेमाल वैश्विक स्तर पर अपने कारोबार के विस्तार तथा नई श्रेणियों में उतरने के लिए करेगी। श्रश्ंखला डी दौर के वित्तपोषण में मौजूदा निवेशकों ने भी भाग लिया। इनमें सिक्स्थ सेंस वेंचर्स एफिलिएट्स का गठजोड़, द मैनकाइंड ग्रुप फैमिली ऑफिस, इन्फोसिस के संस्थापक क्रिस गोपाकृष्णन का फैमिली ऑफिस, उर्मिन ग्रुप और व्हाइट व्हेल वेंचर्स शामिल हैं। वित्तपोषण के इस दौर के साथ ही वाहदम इंडिया 290 करोड़ रुपये से अधिक की राशि जुटा चुकी है।

वापस नहीं लिए जाएंगे नए कृषि कानून : भाजपा सांसद

बलिया, (वेब वार्ता)। नए कृषि कानूनों की वापसी की मांग को लेकर किसानों के व्यापक आंदोलन के बीच भाजपा सांसद और पार्टी किसान मोर्चा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष वीरेन्द्र सिंह मस्त ने कहा है कि सरकार इन कानूनों को वापस नहीं लेगी। बलिया से सांसद मस्त ने मंगलवार को यहां संवाददाताओं से बातचीत करते हुए कहा है कि सरकार नये कृषि कानूनों को वापस नहीं लेगी और इन कानूनों को वापस लेने के लिए नहीं बनाया गया है। उन्होंने सवाल किया है कि संसद में बना कानून अगर सड़क पर आंदोलन करके वापस हो जाएगा तो संसद की क्या प्रतिष्ठा रह जाएगी। हालांकि भाजपा सांसद ने यह भी कहा कि सरकार किसानों और कृषि के हित में किसी भी तरह के सुझाव का स्वागत करेगी, वह स्वयं किसान हैं तथा किसानों और कृषि के हित में पहल करने के लिए तैयार हैं। मस्त का यह बयान ऐसे समय आया है जब नए कृषि कानूनों के खिलाफ पिछले साल दिसंबर से प्रदर्शन कर रहे किसानों ने पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में महापंचायत का आयोजन करके नए कानूनों को वापस लेने की मांग और बुलंद की थी। उन्होंने कांग्रेस, सपा, बसपा और राष्ट्रीय लोकदल को नसीहत देते हुए कहा कि इन पार्टियों को सामने आकर अपने बैनर तले किसान आंदोलन करना चाहिए। भाजपा नेता ने कहा कि कृषि कानूनों के खिलाफ जारी किसानों का आंदोलन भविष्य के किसान आंदोलनों पर सवाल खड़ा करने के साथ ही भरोसे का संकट पैदा करेगा।

पेज 3 का शेष

ग्रामीणों ने बताया कि सरकारी अस्पतालों पर लगा रहता ताला और साथ ही डॉक्टरों का बर्ताव ठीक नही। ग्रामीण क्षेत्रों में उप स्वास्थ्य केंद्र खुले हैं। शासन ने उप स्वास्थ्य केंद्रों के भवन बनवाकर उन पर रंगरोगन करा दिया लेकिन स्टॉफ की माकूल व्यवस्था नहीं की। जिससे यह यह उप स्वास्थ्य केंद्र बंद रहते हैं। यही हालत पिरौना में स्थित प्राथमिक उपस्वास्थ्य केंद्र की भी है। यह अस्पताल दोपहर 12 बजे बंद हो जाता है। मजबूरन डॉक्टरों को झोलाछाप डॉक्टरों से इलाज कराना पड़ता है। उद्धरित लेख छिपाएं सीएमओ ने बताया कि टीम बनाकर की जाएगी कार्यवाही। जल्द ही एक टीम बनाई जाएगी।

आखिर क्यों है ग्रामीण इलाको में लोगो को झोलाछाप डॉक्टरों पर भरोसा

जालौन जिले में नगर सहित आस पास के ग्रामीण इलाकों में झोलाछाप डॉक्टर्स की चांदी है. इन्होने मेडिकल प्रोफेशन को फर्जी तरीके से हाईजैक कर रखा है और उसे अपनी कमाई का जरिया बनाए हैं. झोलाछाप डॉक्टर लोगों की जिंदगी के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं. जिले में इनकी दुकानें दिनों दिन बढ़ती जा रहीं हैं. इसका एक कारण ये भी है कि लोगों का इन पर भरोसा बढ़ता जा रहा हैं. जबकि मरीजों को न अपनी जान की परवाह है और न ही मनमानी फीस की जालौन जिले में कुछ ऐसे ही हालात ग्रामीण क्षेत्रों में नजर आते हैं. जहां एक या दो नहीं बल्कि कई ऐसे झोलाछाप डॉक्टरों ने अपने क्लीनिक्स खोल रखे हैं. इनके पास ना तो डिप्लोमा है ना ही डिग्री. अधिकचरी जानकारी के साथ वे कई गांवों के 'डॉक्टर साहब' बन बैठे हैं. ग्रामीण इलाकों में अपनी कमाई का जरिया बनाए हुए झोलाछाप डॉक्टर लोगों की जिंदगी के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं. लेकिन गलती सिर्फ झोलाछाप डॉक्टरों की नहीं है. बल्कि उन लोगो की भी हैं जो जल्द भरोसा कर लेते हैं इनके पास इलाज कराने पहुंचने वाले लोग जरुरी नहीं की अनपढ़ हैं. कई लोग पढ़े लिखे भी होते हैं. आखिर क्या कारण है कि लोग मुफ्त का इलाज छोड़कर भी पैसे देने के लिए इन झोलाछाप डॉक्टरों के पास जाते हैं. जमीनी हकीकत जानने के लिए दैनिक जागरण ने एक झोलाछाप डॉक्टर से इलाज करा कर लौट रहे मरीज से बात की पिरौना के एक झोलाछाप डॉक्टर से डायरिया की दवा लेकर लौट रहे बुजुर्ग मरीज से जब हमने

उन्नाव। सदर विधानसभा के ग्राम बुद्धि खेड़ा पतारी में वर्ल्ड विजन एवं मास्टर राम प्रकाश के द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पानी की टंकी का लोकार्पण पुस्तक का विमोचन पोषण सामग्री का वितरण करते सदर विधायक इसी क्रम में ग्राम राजे पुर में आयोजित किसान चौपाल के कार्यक्रम में किसानों को सम्बोधित करते सदर विधायक पंकज गुप्ता

अवध की आवाज हिन्दी दैनिक, प्रकाशक ,मुद्रक व स्वामी,अनिल कुमार सिंह द्वारा स्काई लाइन प्रिन्टर्स,119/23 खन्दारी लेन, लालबाग, लखनऊ उ0प्र0 से मुद्रित तथा डी–97/3 व 7,सेक्टर–7, इन्दिरा नगर,लखनऊ,उ0प्र0 से प्रकाशित। सम्पादक अनिल कुमार सिंह फोन : 0522–4340954 मो0–7905407289, Email: avadhkiaawaz@gmail.com

R.N.I.- UPHIN/2012/45127

नोट : समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादोंका न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।